अधिकार 8
त्रिकरण चूलिका अधिकार

Presentation Developed By:
Smt. Sarika Vikas Chhabra

मंगलाचरण

पणमिय सिरसा णेमिं, गुणरयणविभूसणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणणिलयं, पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥1॥

णमह गुणरयणभूसण, सिद्धंतामियमहद्धिभवभावं ।
वरवीरणंदिचंदं, णिम्मलगुणमिंदणंदिगुरुं ॥896॥

www.JainKosh.org

णमह गुणरयणभूसण, सिद्धंतामियमहद्धिभवभावं ।
वरवीरणंदिचंदं, णिम्मलगुणमिंदणंदिगुरुं ॥896॥

- अर्थ—हे गुणरूपीरत्न के आभूषण चामुंडराय ! तुम सिद्धान्तशास्त्ररूपी अमृतमय महासमुद्र में उत्पन्न हुए ऐसे उत्कृष्ट वीरनंदि नामा आचार्यरूपी चंद्रमा को नमस्कार करो, तथा निर्मलगुणों वाले इंद्रनंदि नामा गुरु को नमस्कार करो ॥896॥

www.JainKosh.org

इगिवीसमोहखवणुव-समणणिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं । पढमं अधापवत्तं, करणं तु करेदि अपमत्तो ॥897॥

- अर्थ—अनंतानुबंधी कषाय की चौकड़ी के बिना शेष 21 चारित्रमोहनीय की प्रकृतियों के क्षय करने के लिये अथवा उपशम करने के निमित्त अध:प्रवृत्तादि तीन करण कहे गये हैं ।
- उनमें से पहले अध:प्रवृत्तकरण को सातिशय अप्रमत्त गुणस्थान वाला प्रारंभ करता है । यहाँ करण नाम परिणाम का है ॥897॥

www.JainKosh.org

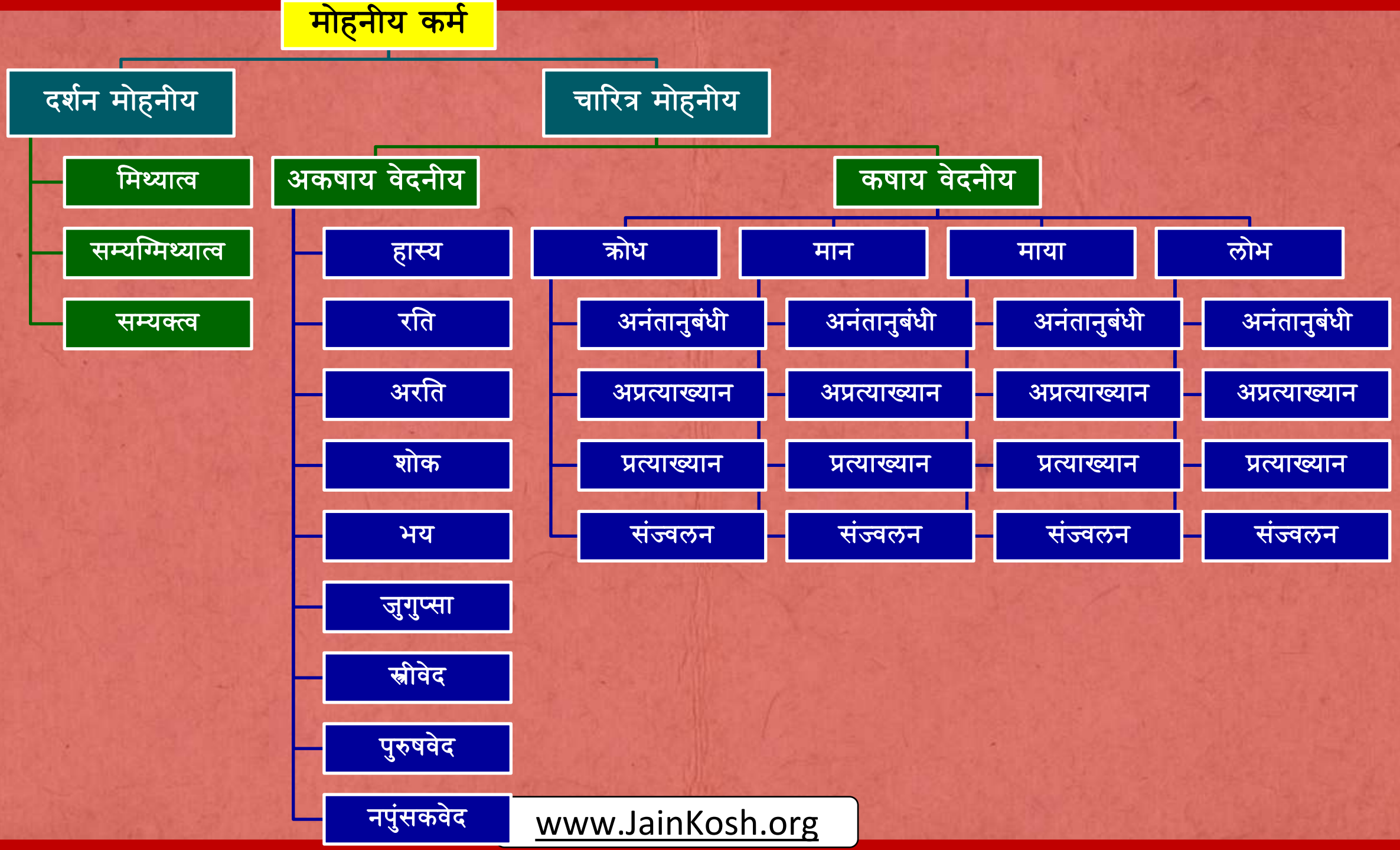
मोहनीय कर्म
दर्शन मोहनीय
चारित्र मोहनीय
मिथ्यात्व
सम्यग्मिथ्यात्व
सम्यक्त्व
अकषाय वेदनीय
कषाय वेदनीय
हास्य
रति
अरति
शोक
भय
जुगुप्सा
स्त्रीवेद
पुरुषवेद
नपुंसकवेद
क्रोध
मान
माया
लोभ
अनंतानुबंधी
अनंतानुबंधी
अनंतानुबंधी
अनंतानुबंधी
अप्रत्याख्यान
अप्रत्याख्यान
अप्रत्याख्यान
अप्रत्याख्यान
प्रत्याख्यान
प्रत्याख्यान
प्रत्याख्यान
प्रत्याख्यान
संज्वलन
संज्वलन
संज्वलन
संज्वलन
www.JainKosh.org

श्रेणी क्या होती है?

श्रेणी अर्थात् चारित्र मोहनीय की 21 प्रकृतियों के उपशम या क्षय में निमित्तभूत वृद्धिंगत वीतराग परिणाम

उपशम श्रेणी

21 प्रकृतियों का उपशम

8, 9, 10, 11वा गुणस्थान

क्षपक श्रेणी

21 प्रकृतियों का क्षय

8, 9, 10, 12वा गुणस्थान

www.JainKosh.org

अनंतानुबन्धी-4 प्रकृतियों को क्यों छोड़ दिया?

अनंतानुबन्धी-4 का अंतरकरण रूप उपशम नहीं हो सकता है । इसलिए उसे उपशम श्रेणी चढ़ने के पूर्व ही विसंयोजित कर दिया जाता है।

क्षपक श्रेणी क्षायिक सम्यग्दृष्टि ही चढ़ता है । उसके अनंतानुबन्धी-4 का सत्त्व होता ही नहीं है ।

इस तरह श्रेणी चढ़ते समय अनंतानुबन्धी-4 का सत्त्व ही नहीं होता है। अतः मोहनीय की शेष प्रकृतियों का ही उपशम या क्षय किया जाता है ।

www.JainKosh.org

दर्शन मोहनीय की 3 प्रकृतियों को क्यों छोड़ दिया?

दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृतियों का श्रेणी चढ़ने के पूर्व ही या तो उपशम कर दिया जाता है अथवा क्षय कर दिया जाता है ।

इसलिये इन 3 प्रकृतियों को छोड़कर शेष का क्षय या उपशम किया जाता है ।

www.JainKosh.org

श्रेणी आरोहण कौन करता है?

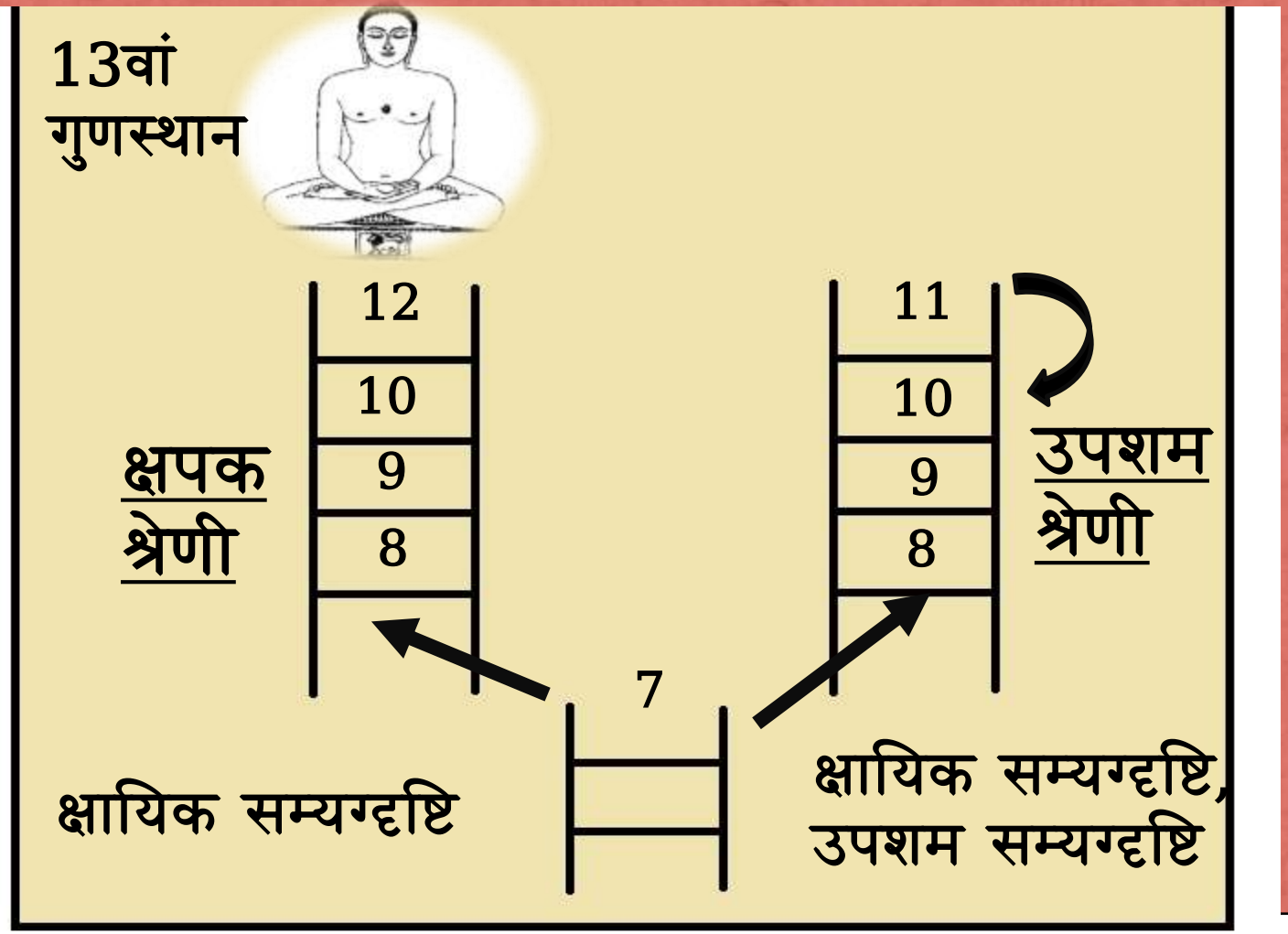

क्षायिक सम्यग्दृष्टि मुनिराज उपशम श्रेणी या क्षपक श्रेणी आरोहण कर सकते हैं।

उपशम सम्यग्दृष्टि मुनिराज उपशम श्रेणी ही आरोहण कर सकते हैं, क्षपक श्रेणी नहीं ।

श्रेणी चढ़ने की विधि

क्षायोपशमिक सम्यक्त्वी मुनिराज

अनंतानुबंधी की विसंयोजना करके

फिर विश्राम करके

दर्शन मोह का उपशम करें । अथवा दर्शन मोह की क्षपणा करें ।

विश्राम करके

अध:प्रवृत्तकरण प्रारंभ करते हैं।

अथवा

क्षायिक सम्यक्त्वी अप्रमत्त मुनिराज

अध:प्रवृत्तकरण करते हैं ।

www.JainKosh.org

प्रथमोपशम सम्यक्त्व

अनन्तानुबन्धी-4 और दर्शन मोह की 1, 2 अथवा 3 प्रकृतियों के उपशम से

मिथ्यात्व गुणस्थान से 4, 5 और 7वें गुणस्थान में

जो उपशम सम्यक्त्व प्राप्त होता है

उसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व कहते हैं ।

इसके साथ श्रेणी आरोहण नहीं किया जा सकता है।

www.JainKosh.org

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व

उपशम श्रेणी चढ़ने के सन्मुख अवस्था में क्षायोपशमिक सम्यक्त्व से जो उपशम सम्यक्त्व प्राप्त होता है उसे द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कहते हैं ।

द्वितीयोपशम सम्यक्त्व प्राप्त करने की प्रक्रिया 4-7वे गुणस्थान में होती है ।

यह जीव पहले अनंतानुबन्धी की विसंयोजना कर लेता है ।

www.JainKosh.org

जम्हा उवरिमभावा, हेट्ठिमभावेहिं सरिसगा होंति।
तम्हा पढमं करणं, अधापवत्तो त्ति णिद्दिट्ठं ॥898॥

अर्थ – जिस कारण से ऊपर के समयवर्ती जीवों के परिणाम नीचे के समयवर्ती जीवों के परिणामों के सदृश अर्थात् संख्या और विशुद्धि की अपेक्षा समान होते हैं, इस कारण से प्रथम करण को अध:प्रवृत्त करण कहा है ॥898॥

www.JainKosh.org

करण किसे कहते हैं?

जिन परिणाम विशेषों के द्वारा

दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय के

उपशमादिरूप विवक्षित भाव उत्पन्न किए जाते हैं

उन परिणामों को करण कहते हैं।

www.JainKosh.org

तीन करण

अधःप्रवृत्तकरण	• जहाँ भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम समान भी हो सकते हैं और भिन्न भी हो सकते हैं ।
अपूर्वकरण	• जहाँ भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम भिन्न ही होते हैं ।
अनिवृत्तिकरण	• जहाँ समान समयवर्ती जीवों के परिणाम समान ही होते हैं ।

www.JainKosh.org

तीन करण एक जीव की अपेक्षा हैं या नाना जीवों की अपेक्षा?

ये तीनों करण नाना जीवों की अपेक्षा से कहे जाते हैं ।

एक जीव की अपेक्षा तो प्रतिसमय अनंतगुणा-अनंतगुणा विशुद्ध परिणाम ही होते हैं।

त्रैकालिक अनंत जीवों के परिणामों को देखकर उनमें पायी जानी वाली सदृशता-असदृशता को इन तीन करणों द्वारा बताया जाता है।

www.jainkosh.org

अंतोमुहुत्तमेत्तो, तक्कालो होदि तत्थ परिणामा।
लोगाणमसंखमिदा, उवरुवरिं सरिसवड्ढिगया ॥899॥

- अर्थ - इस अध:प्रवृत्तकरण का काल अन्तर्मुहूर्त मात्र है,
- उसमें कुल परिणाम असंख्यातलोक प्रमाण होते हैं और
- ये परिणाम ऊपर-ऊपर सदृश वृद्धि को प्राप्त होते गये हैं ॥899॥

बावत्तरितिसहस्सा, सोलस चउ चारि एक्कयं चेव ।
धणअद्धाणविसेसे, तियसंखा होइ संखेज्जे ॥900॥

- अर्थ—अध:करण के परिणामों की संख्या को साधने के लिये सर्वधन 3072, ऊर्ध्वगच्छ 16, तिर्यग्गच्छ 4, ऊर्ध्वविशेष 4, तिर्यक्विशेष 1 और चय के सिद्ध करने के लिये संख्यात की सहनानी 3 का अंक समझना चाहिये ॥900॥

संदृष्टि क्या होती है?

संदृष्टि, सहनानी, चिह्न — ये एकार्थवाची हैं ।

जैसे गणित में जोड़ की संदृष्टि + है, घटाने की संदृष्टि – है वैसे यहाँ परिणाम, शक्ति आदि बताने के लिए संदृष्टि लिखी जाती है । जैसे लोक की संदृष्टि ≡ है ।

अंक संदृष्टि

- वास्तविक संख्याओं को समझने के लिए जो उदाहरण स्वरूप संख्यायें लेकर बताया जाता है वह अंक संदृष्टि है । जैसे अधःप्रवृत्तकरण के परिणाम 3072 माने ।

अर्थ संदृष्टि

- वास्तविक संख्याओं और तत्संबंधी गणना के करने को अर्थ संदृष्टि कहते हैं । यह पूर्वाचार्यों के द्वारा बताये गये चिह्नों के माध्यम से की जाती है । जैसे अधःप्रवृत्तकरण के परिणाम ≡∂ हैं ।

www.JainKosh.org

अधःप्रवृत्तकरण के परिणामों की अंक संदृष्टि

सर्वधन	3072
ऊर्ध्व गच्छ	16
तिर्यग्गच्छ	4
ऊर्ध्व-विशेष	4
तिर्यक्-विशेष	1
संख्यात की संदृष्टि	3

www.Jain

आदिधणादो सव्वं, पचयधणं संखभागपरिमाणं । करणे अधापवत्ते, होदित्ति जिणेहि णिद्दिट्ठं ॥901॥

- अर्थ—अध:प्रवृत्तकरण में सर्व प्रचयधन आदिधन के संख्यातवें भाग प्रमाण है – ऐसा जिनेन्द्रदेव ने कहा है ॥901॥

- $\frac{\text{आदिधन}}{\text{संख्यात}}$ = प्रचयधन

www.jainkosh.org

चय

अध:प्रवृत्तकरण के प्रथम समय के परिणामों से द्वितीय समय के परिणामों का प्रमाण अधिक होता है ।

द्वितीय समय के परिणामों से तृतीय समय के परिणामों का प्रमाण अधिक होता है ।

इस एकरूपता से अधिक होने वाली संख्या को चय कहते हैं ।

प्रत्येक समय के परिणाम इस चय से बढ़ते जाते हैं ।

चय के अन्य नाम प्रचय, विशेष, उत्तर, अधिक हैं ।

चयधन

अधःप्रवृत्तकरण के द्वितीय आदि समयों में एक-एक चय बढ़ता जाता है ।

5	162 + 4 + 4 + 4 + 4
4	162 + 4 + 4 + 4
3	162 + 4 + 4
2	162 + 4
1	162
समय	परिणामों की संख्या

सब समयों के इन सभी चयों के जोड़ का ही नाम चयधन है।

जैसे यहाँ द्वितीय समय में 4, तृतीय समय में 8, चतुर्थ में 12, पाँचवे में 16 संख्या चयरूप है। इन सभी के जोड़ को चयधन कहा जाता है।

inKosh.org

आदिधन

जितना प्रथम स्थान का प्रमाण है,

उतना-उतना प्रमाण सब स्थानों का ग्रहण करके जोड़ करने पर जो प्रमाण होता है

उसे आदिधन कहते हैं ।

5	162 + 4 + 4 + 4 + 4
4	162 + 4 + 4 + 4
3	162 + 4 + 4
2	162 + 4
1	162
समय	परिणामों की संख्या

जैसे यहाँ प्रथम स्थान का प्रमाण 162 है । इतनी संख्या शेष सारे समयों में भी है । इन सभी के जोड़ को आदिधन कहते हैं ।

.osh.org

उभयधणे सम्मिलिदे, पदकदिगुणसंखरूवहदपचयं ।
सव्वधणं तं तम्हा, पदकदिसंखेण भाजिदे पचयं ॥902॥

- अर्थ—आदिधन और प्रचयधन दोनों को मिलाने से सर्वधन होता है, और उसका प्रमाण गच्छ के वर्ग को संख्यात से गुणा करे फिर उसका चय से गुणा करने पर जो संख्या आवे उतना है ।
- इसी कारण से पद का वर्ग और संख्यात – इन दोनों का भाग सर्वधन में देने से चय का प्रमाण होता है ॥902॥

सर्वधन

सर्वस्थानों संबंधी सारे द्रव्य के जोड़ को सर्वधन कहते हैं ।

जैसे अधःप्रवृत्त करण के सारे परिणामों की संख्या असंख्यात लोक है अथवा अंक संदृष्टि में 3072 मानी है । यह ही सर्वधन कहलाता है । इस सर्वधन को ही विभिन्न समयों में बांटा जाता है ।

सर्वधन, चय के सूत्र

आदिधन + चयधन = सर्वधन

चय $\times$ गच्छ^2 $\times$ संख्यात = सर्वधन

अतः चय निकालने का सूत्र

$$\frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}^2 \times \text{संख्यात}} = \text{चय}$$

गच्छ

स्थानों के प्रमाण को गच्छ कहते हैं ।

गच्छ, पद, स्थान, Number of places — एकार्थवाची हैं ।

इस प्रकरण में गच्छ याने अधःप्रवृत्त करण के समयों की संख्या ।

यह वास्तविक रूप में अंतर्मुहूर्त प्रमाण है तथा अंक संदृष्टि में 16 समय है ।

चयधणहीणं दव्वं, पदभजिदे होदि आदिपरिमाणं ।
आदिम्मि चये उड्ढे, पडिसमयधणं तु भावाणं ॥903॥

- अर्थ—सर्वधन में से चयधन कम करके जो प्रमाण हो उसमें गच्छ का भाग देने से पहले समयसंबंधी विशुद्ध भावों का प्रमाण होता है, और
- उन प्रथम समय के परिणामों में एक-एक चय बढ़ा देने से हर एक समय के भावों का प्रमाण होता है ॥903॥

www.JainKosh.org

आदि

प्रथम स्थान के परिणामों की संख्या को आदि कहते हैं ।

जैसे अंक संदृष्टि में प्रथम समय के परिणामों की संख्या 162 है । यही यहाँ पर आदि का प्रमाण है ।

$$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गच्छ}} = \text{आदि}$$

आदि में एक चय जोड़ने पर द्वितीय समय संबंधी परिणामों की संख्या आती है । इसी प्रकार एक-एक चय जोड़ते हुए अंतिम समय संबंधी परिणामों की संख्या प्राप्त होती है ।

www.jainkosh.org

पचयधणस्साणयणे, पचयं पभवं तु पचयमेव हवे ।
रूऊणपदं तु पदं, सव्वत्थ वि होदि णियमेण ॥904॥

- अर्थ—प्रचयधन के लाने के लिये सब जगह उत्तर और आदि – ये दोनों प्रचय के प्रमाण होते हैं; और
- यहाँ गच्छ का प्रमाण विवक्षित गच्छ के प्रमाण से 1 कम नियम से होता है, क्योंकि पहले स्थान में चय का अभाव है ॥904॥

समय	परिणामों की संख्या
16	162 + (4 × 15)
15	162 + (4 × 14)
14	162 + (4 × 13)
13	162 + (4 × 12)
12	162 + (4 × 11)
11	162 + (4 × 10)
10	162 + (4 × 9)
9	162 + (4 × 8)
8	162 + (4 × 7)
7	162 + (4 × 6)
6	162 + (4 × 5)
5	162 + 4 + 4 + 4 + 4
4	162 + 4 + 4 + 4
3	162 + 4 + 4
2	162 + 4
1	162

$$\{ (\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय}) + \text{आदि} \} \times \text{गच्छ} = \text{चयधन}$$

चूँकि यहाँ चय वाले स्थान 15 ही हैं। अतः सूत्र में गच्छ का प्रमाण (16 – 1) = 15 ही है ।

आदि का प्रमाण चयप्रमाण ही है क्योंकि प्रथम स्थान में 4 है ।

$$\{ (\frac{15 - 1}{2} \times 4) + 4 \} \times 15$$

$$\{ (7 \times 4) + 4 \} \times 15$$

$$32 \times 15 = 480$$

चयधन

www.jainkosh.org

चयधन का दूसरा सूत्र

$$\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ} = \text{चयधन}$$

यहाँ गच्छ का प्रमाण अधःप्रवृत्त करण के समयप्रमाण अंतर्मुहूर्त ही है । अंक संदृष्टि में 16 है ।

$$\frac{16 - 1}{2} \times 4 \times 16$$

$$15 \times 2 \times 16$$

$$15 \times 32 = 480$$

आवश्यक सूत्र

$$\frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}^2 \times \text{संख्यात}} = \text{चय}$$

$$\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ} = \text{चयधन}$$

सर्वधन – चयधन = आदिधन

$$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गच्छ}} = \text{आदि}$$

अंक संदृष्टि: सर्वधन = 3072, गच्छ = 16, संख्यात = 3

चय	$\frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}^2 \times \text{संख्यात}}$	$\frac{3072}{16 \times 16 \times 3} = 4$
चयधन	$\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ}$	$\frac{16 - 1}{2} \times 4 \times 16$ $= 15 \times 2 \times 16 = 480$
आदिधन	सर्वधन – चयधन	$3072 - 480 = 2592$
आदि	$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गच्छ}}$	$\frac{2592}{16} = 162$

16	222
15	218
14	214
13	210
12	206
11	202
10	198
9	194
8	190
7	186
6	182
5	178
4	174
3	170
2	166
1	162
समय	परिणामों की संख्या

अध:प्रवृत्त करण के परिणामों की रचना

(अंक संदृष्टि से)

कुल परिणाम = 3072

समय = 16

चय = 4

w.JainKosh.org

समय	परिणामों की संख्या
16	162 + (4 × 15)
15	162 + (4 × 14)
14	162 + (4 × 13)
13	162 + (4 × 12)
12	162 + (4 × 11)
11	162 + (4 × 10)
10	162 + (4 × 9)
9	162 + (4 × 8)
8	162 + (4 × 7)
7	162 + (4 × 6)
6	162 + (4 × 5)
5	162 + 4 + 4 + 4 + 4
4	162 + 4 + 4 + 4
3	162 + 4 + 4
2	162 + 4
1	162

चयधन का तात्पर्य

आदि (162) से अधिक जो द्रव्य ऊपर-ऊपर अधिक दिया है, उसका जोड़ चयधन है ।

hKosh.org

पडिसमयधणेवि पदं, पचयं पभवं च होइ तेरिच्छे ।
अणुकट्टिपदं सव्वद्धाणस्स य संखभागो हु ॥905॥

- अर्थ—हर एक समय का धन लाने के लिये अनुकृष्टि के गच्छ आदि सबकी रचना तिर्यग् (तिरछी) होती है और
- अनुकृष्टि का गच्छ ऊर्ध्वगच्छ के संख्यातवें भाग प्रमाण निश्चयकर होता है ॥905॥

www.JainKosh.org

अनुकृष्टि

अनुकृष्टि याने प्रत्येक समय के परिणाम-खंड।

अनुकृष्टि गच्छ/आयाम

एक समय के परिणामों के नाना खंडों की संख्या अनुकृष्टि का गच्छ है।

$$\frac{\text{अधःप्रवृत्त करण काल}}{\text{संख्यात}}$$

ऊपर नीचे के समयों के परिणामों में समानता दिखाने के लिए अनुकृष्टि बनाई जाती है ।

www.JainKosh.org

अणुकट्टिपदेण हदे, पचये पचयो दु होइ तेरिच्छे ।
पचयधणूणं दव्वं, सगपदभजिदं हवे आदि ॥906॥

- अर्थ—अनुकृष्टि के गच्छ का भाग ऊर्ध्व-चय में देने से जो प्रमाण हो वह अनुकृष्टि का चय होता है और
- प्रथमसमयसंबंधी अनुकृष्टि के सर्वधन में से प्रचयधन कम करने पर जो प्रमाण आये, उसमें अपने गच्छ का भाग देने से अनुकृष्टि के प्रथमखंड का प्रमाण होता है ॥906॥

www.JainKosh.org

अनुकृष्टि का चय

जो प्रत्येक समय संबंधी तिर्यग् खंड बनाये जाते हैं, वे क्रमशः समान वृद्धि लिए होते हैं ।

इस समान वृद्धि को ही अनुकृष्टि का चय कहते हैं ।

$$\frac{\text{ऊर्ध्व चय}}{\text{अनुकृष्टि गच्छ}} = \text{अनुकृष्टि का चय}$$

अनुकृष्टि का सर्वधन

जो प्रत्येक समय के परिणामों की संख्या है, वही यहाँ पर सर्वधन का प्रमाण है ।

जैसे अंक संदृष्टि में प्रथम समय के परिणामों की संख्या 162 है, तो प्रथम समय संबंधी खंड लाने के लिए 162 ही सर्वधन का प्रमाण है ।

इसी सर्वधन के आधार से प्रत्येक खंड में परिणाम दिये जायेंगे ।

अनुकृष्टि रचना

अनुकृष्टि गच्छ	$= \frac{\text{ऊर्ध्व गच्छ}}{\text{संख्यात}} = \frac{16}{4} = 4$
अनुकृष्टि चय	$= \frac{\text{ऊर्ध्व चय}}{\text{अनुकृष्टि गच्छ}} = \frac{4}{4} = 1$
प्रथम समय संबंधी सर्वधन = 162, गच्छ = 4, चय = 1	
चयधन	$= \frac{4-1}{2} \times 1 \times 4 = 3 \times 1 \times 2 = 6$
आदिधन	$= 162 - 6 = 156$
आदि	$= \frac{156}{4} = 39$

आदिम्मि कमे वड्ढदि, अणुकट्टिस्स य चयं तु तेरिच्छे ।
इदि उड्ढतिरियरयणा, अधापवत्तम्मि करणम्मि ॥907॥

- अर्थ—उस प्रथमखंड से तिर्यग्रूप अनुकृष्टि का एक-एक चय क्रम से बढ़ता जाता है तब द्वितीयादि खंडों का प्रमाण होता है ।
- इस प्रकार ऊर्ध्वरूप और तिर्यग्रूप दोनों ही रचना अधःप्रवृत्तकरण में जाननी चाहिये ॥907॥

www.JainKosh.org

- प्रथम खंड में एक-एक अनुकृष्टि चय जोड़ने पर शेष खंडों का प्रमाण आता है ।
- तो प्रथम समय संबंधी रचना ऐसे बनेगी:

162 ➔	39	40	41	42

- द्वितीय समय संबंधी रचना इस प्रकार बनेगी:

166 ➔	40	41	42	43

- ऐसे ही सारे समयों में बनाइये ।

16	222	54	55	56	57
15	218	53	54	55	56
14	214	52	53	54	55
13	210	51	52	53	54
12	206	50	51	52	53
11	202	49	50	51	52
10	198	48	49	50	51
9	194	47	48	49	50
8	190	46	47	48	49
7	186	45	46	47	48
6	182	44	45	46	47
5	178	43	44	45	46
4	174	42	43	44	45
3	170	41	42	43	44
2	166	40	41	42	43
1	162	39	40	41	42
समय	परिणामों की संख्या	अनुकृष्टि के खंड			

अधःप्रवृत्त करण के सर्व समयों की अनुकृष्टि रचना

अनुकृष्टि रचना

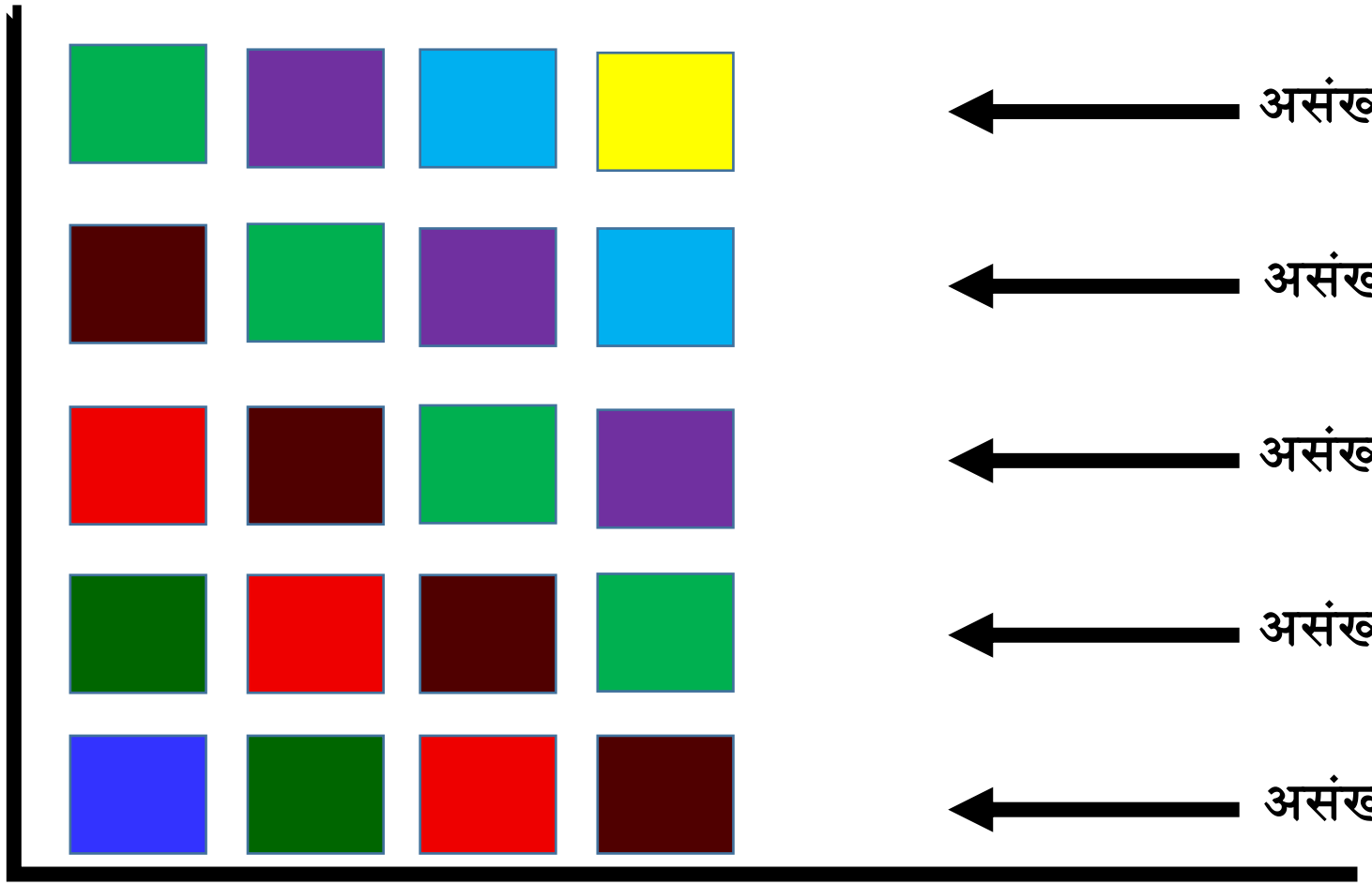

पंचम समय ← असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

चतुर्थ समय ← असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

तृतीय समय ← असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

द्वितीय समय ← असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

प्रथम समय ← असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

काल - अंतर्मुहूर्त

प्रत्येक खंड के परिणाम की विशेषता

जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट भेदों से भिन्न प्रतिनियत खंड के विशुद्ध परिणामों के भेद एक-एक खंड में असंख्यात लोकप्रमाण हैं।

प्रत्येक समय के परिणाम उत्तरोत्तर सदृश वृद्धि को लिए हुए विशेष अधिक हैं।

प्रत्येक खंड के परिणामों में असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान होते हैं।

अनुकृष्टि चय में भी असंख्यात लोकमात्र षट्स्थान होते हैं।

अध:प्रवृत्त करण के परिणाम

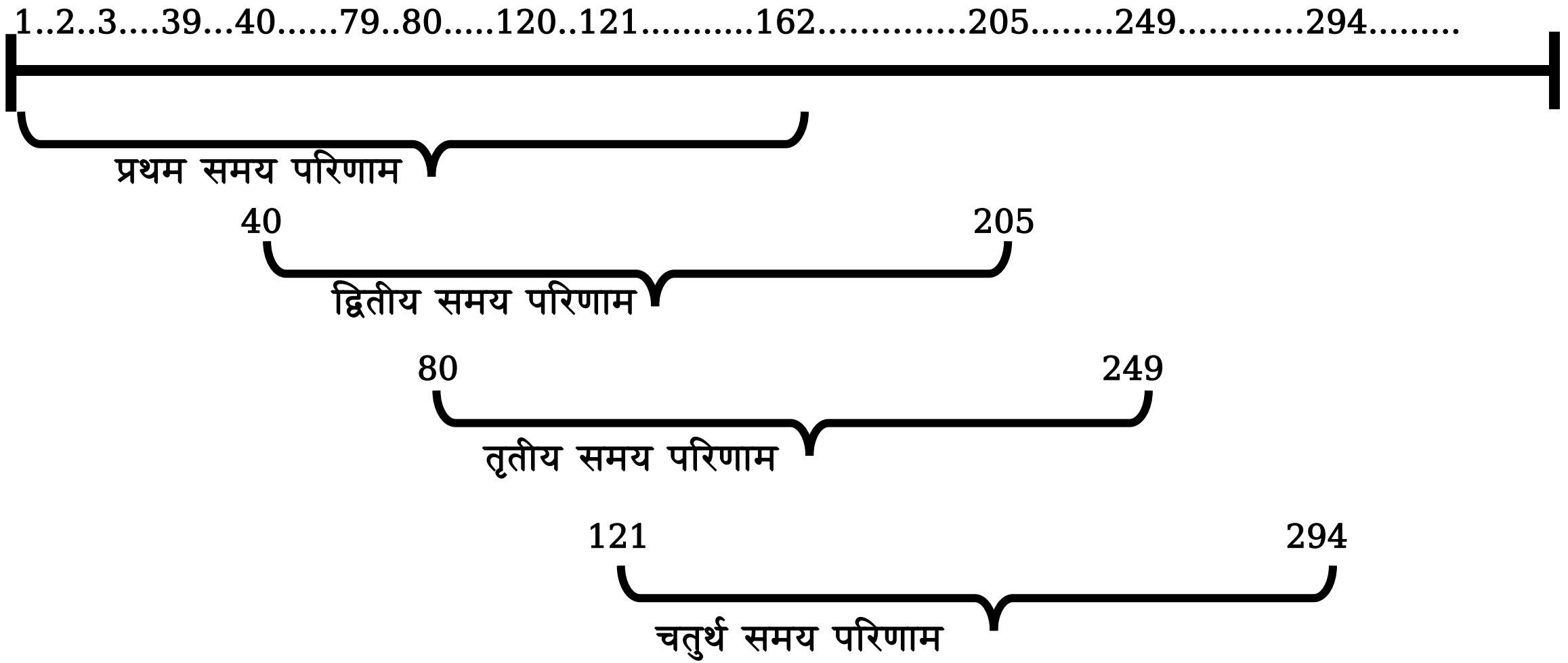

अध:प्रवृत्त करण के समयों की अनुकृष्टि रचना

4th समय के परिणाम	121 122 .....294 = 174
3rd समय के परिणाम	80 81 .....249 =170
2nd समय के परिणाम	40 41 .....205 =166
1st समय के परिणाम	1 2 3 .....162 = 162

www.JainKosh.org

अनुकृष्टि रचना

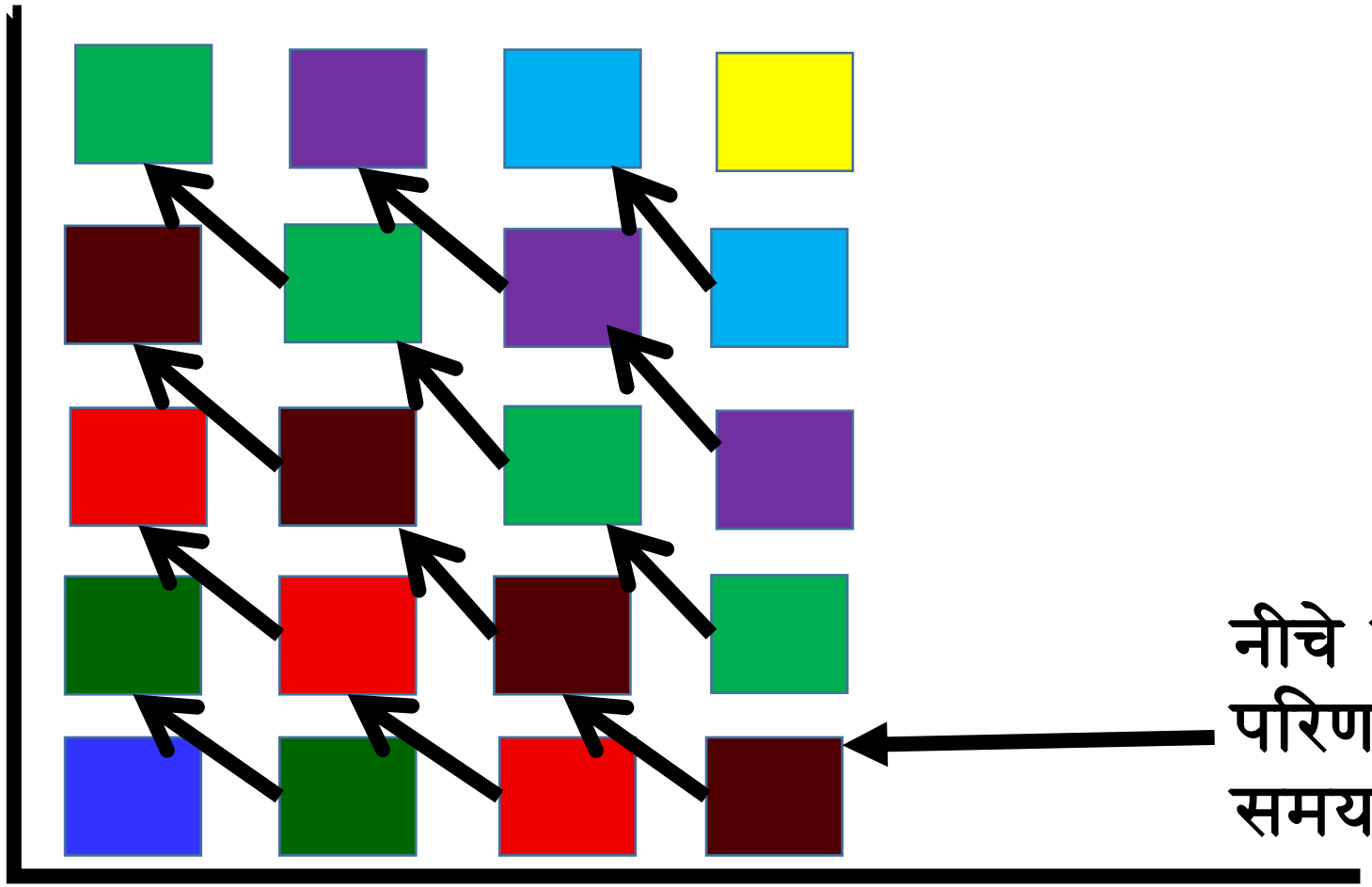
पंचम समय
चतुर्थ समय
तृतीय समय
द्वितीय समय
प्रथम समय
नीचे के समय में स्थित परिणाम-पुंज का ऊपर के समय में पाया जाना
काल - अंतर्मुहूर्त

4	174	42	43	44	45
		(121-162)	(163-205)	(206-249)	(250-294)
3	170	41	42	43	44
		(80-120)	(121-162)	(163-205)	(206-249)
2	166	40	41	42	43
		(40-79)	(80-120)	(121-162)	(163-205)
1	162	39	40	41	42
		(1-39)	(40-79)	(80-120)	(121-162)
समय	परिणामों की संख्या	अनुकृष्टि के खंड			

अनुकृष्टि खंडों के परिणाम

सबसे जघन्य खण्ड व उत्कृष्ट खण्ड सर्वथा असमान है ।

एक खंड के जघन्य से उसी खण्ड का उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणी विशुद्धता लिये है ।

एक खंड के उत्कृष्ट से अगले खण्ड का जघन्य परिणाम अनंत गुणी विशुद्धता लिये है ।

www.jainkosh.org

अधःप्रवृत्तकरण का काल अन्तर्मुहूर्त है अर्थात् असंख्यात समय।

कुल परिणामों की संख्या असंख्यात लोक प्रमाण है।

चय का प्रमाण भी असंख्यात लोक है।

वास्तविक संख्याएं

एक-एक समय के परिणामों की संख्या भी असंख्यात लोक है।

अनुकृष्टि गच्छ अन्तर्मुहूर्त का संख्यातवा भाग होकर भी असंख्यात है।

अनुकृष्टि चय का प्रमाण भी असंख्यात लोक है।

एक-एक अनुकृष्टि खंड के परिणाम भी असंख्यात लोक हैं।

अंतोमुहुत्तकालं, गमिऊण अधापवत्तकरणं तं।
पडिसमयं सुज्झंतो, अपुव्वकरणं समल्लियइ ॥908॥

- अर्थ - जिसका अन्तर्मुहूर्त मात्र काल है, ऐसे अध:प्रवृत्तकरण को बिताकर
- वह सातिशय अप्रमत्त प्रतिसमय अनंतगुणी विशुद्धि से बढ़ता हुआ अपूर्वकरण को करता है ॥908॥

स्वरूप - अपूर्वकरण

भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम

भिन्न ही

एक समयवर्ती जीवों के परिणाम

भिन्न भी

समान भी

अपूर्वकरण गुणस्थान

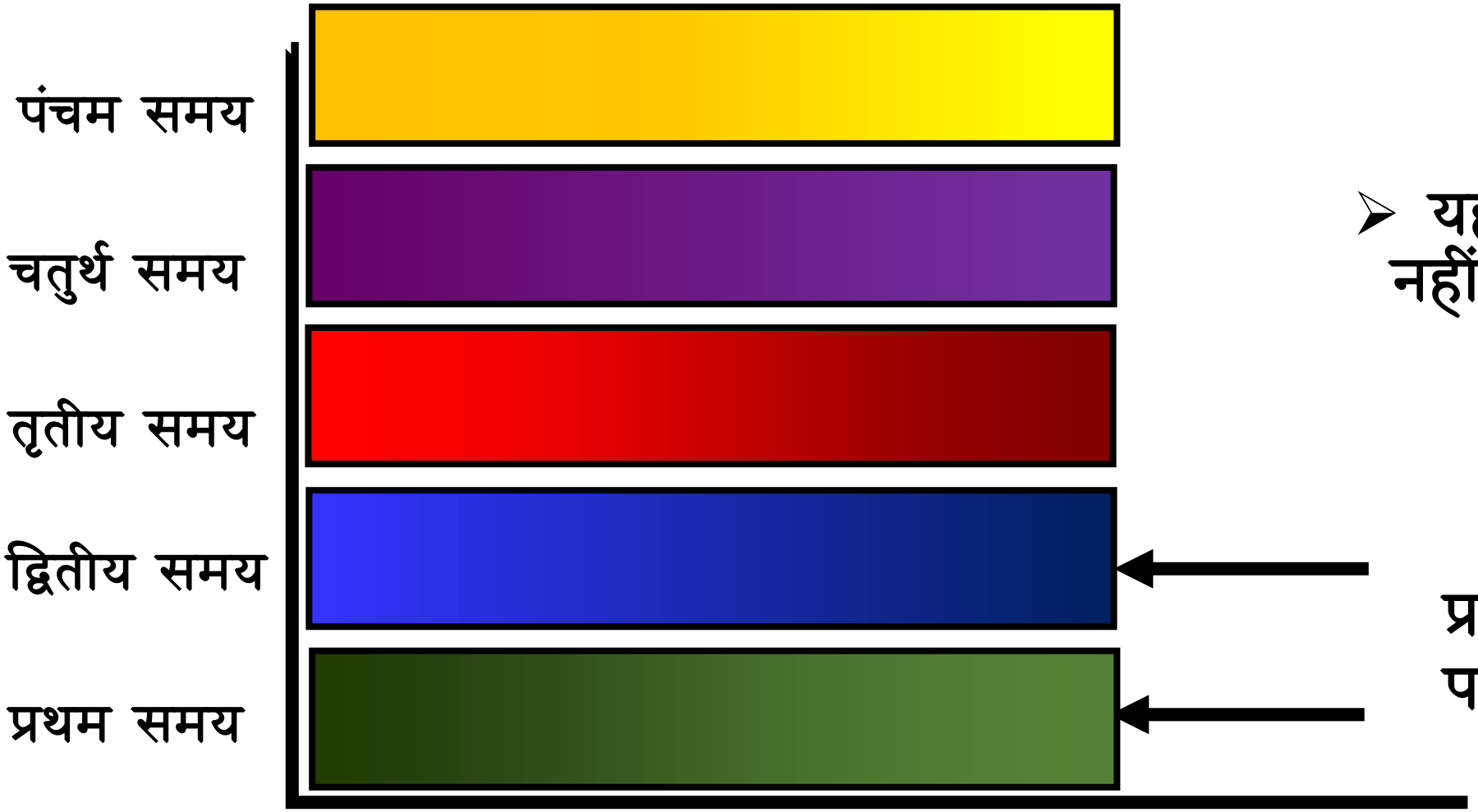

- यहाँ अनुकृष्टि रचना नहीं है ।

प्रतिसमय अपूर्व-अपूर्व परिणाम

काल - अंतर्मुहूर्त

असंख्यात लोक प्रमाण परिणाम

अपूर्वकरण में अनुकृष्टि क्यों नहीं है?

ऊपर और नीचे के परिणामों में समानता दिखाने के लिए अनुकृष्टि बनाई जाती है ।

अपूर्वकरण में ऊपर और नीचे के परिणामों में समानता है ही नहीं ।

इसलिये अपूर्वकरण में अनुकृष्टि रचना नहीं होती है ।

www.JainKosh.org

छण्णउदिचउसहस्सा, अट्ठ य सोलसधणं तदद्धाणं । परिणामविसेसो वि य, चउ संखापुव्वकरणम्मि ॥909॥

- अर्थ—अपूर्वकरण में अंकों की संदृष्टि इस प्रकार है —
- सर्वधन = 4096, गच्छ = 8, परिणाम-विशेष (चय) = 16 और संख्यात का प्रमाण = 4 ॥909॥

अंकसंदृष्टि: सर्वधन = 4096, गच्छ = 8, संख्यात = 4

पद	सूत्र	उदाहरण
चय	$\frac{\text{सर्वधन}}{\text{गच्छ}^2 \times \text{संख्यात}}$	$\frac{4096}{8 \times 8 \times 4} = 16$
चयधन	$\frac{\text{गच्छ} - 1}{2} \times \text{चय} \times \text{गच्छ}$	$\frac{8 - 1}{2} \times 16 \times 8$ $= 7 \times 8 \times 8 = 448$
आदिधन	सर्वधन – चयधन	$4096 - 448 = 3648$
आदि	$\frac{\text{आदिधन}}{\text{गच्छ}}$	$\frac{3648}{8} = 456$

अपूर्वकरण के परिणामों की रचना (अंक संदृष्टि से)

समय	परिणामों की संख्या
8	568 (3529-4096)
7	552 (2977-3528)
6	536 (2441-2976)
5	520 (1921-2440)
4	504 (1417-1920)
3	488 (929-1416)
2	472 (457-928)
1	456 (1-456)

कुल परिणाम = 4096

समय = 8

चय = 16

JainKosh.org

अंतोमुहुत्तमेत्ते, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
कमउड्ढापुव्वगुणे, अणुकट्टी णत्थि णियमेण ॥910॥

- अर्थ - इस गुणस्थान का काल अन्तर्मुहूर्त मात्र है,
- इसमें परिणाम असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं, और
- वे परिणाम उत्तरोत्तर प्रतिसमय समानवृद्धि को लिये हुए हैं।
- इस गुणस्थान में नियम से अनुकृष्टि रचना नहीं होती है ॥910॥

www.JainKosh.org

वास्तविक संख्याएं

अपूर्वकरण का काल अन्तर्मुहूर्त है अर्थात् असंख्यात समय ।

कुल परिणामों की संख्या असंख्यात लोक प्रमाण है ।

चय का प्रमाण भी असंख्यात लोक है ।

एक-एक समय के परिणामों की संख्या भी असंख्यात लोक है ।

www.JainKosh.org

परिणामों की विशुद्धि

अपूर्वकरण के पहले समय का जघन्य परिणाम अधःप्रवृत्त करण के अन्तिम सर्वविशुद्ध परिणाम से भी अनन्तगुणा विशुद्ध है ।

प्रत्येक समय के जघन्य परिणाम से उसी समय का उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणी विशुद्धता लिए है ।

एक समय के उत्कृष्ट परिणाम से अगले समय का जघन्य परिणाम भी अनंत गुणी विशुद्धता लिए है ।

www.JainKosh.org

एक्कहि कालसमये, संठाणादीहिं जह णिवट्टंति।
ण णिवट्टंति तहावि य, परिणामेहिं मिहो जे हु ॥911॥
होंति अणियट्टिणो ते, पडिसमयं जेस्सिमेक्कपरिणामा।
विमलयरझाणहुयवह-सिहाहिं णिद्दड्ढ कम्मवणा ॥912॥

- अर्थ - अन्तर्मुहूर्तमात्र अनिवृत्तिकरण के काल में से आदि या मध्य या अन्त के एक समयवर्ती अनेक जीवों में जिसप्रकार शरीर की अवगाहना आदि बाह्य कारणों से तथा ज्ञानावरणादिक कर्म के क्षयोपशमादि अन्तरंग कारणों से परस्पर में भेद पाया जाता है, उसप्रकार जिन परिणामों के निमित्त से परस्पर में भेद नहीं पाया जाता उनको अनिवृत्तिकरण कहते हैं।
- अनिवृत्तिकरण गुणस्थान का जितना काल है, उतने ही उसके परिणाम हैं इसलिये उसके काल के प्रत्येक समय में अनिवृत्तिकरण का एक ही परिणाम होता है तथा
- ये परिणाम अत्यन्त निर्मल ध्यानरूप अग्नि की शिखाओं की सहायता से कर्मवन को भस्म कर देते हैं ॥911-912॥

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

अ + निवृत्ति + करण

विद्यमान नहीं है + भेद + विशुद्ध परिणामों में

वह अनिवृत्तिकरण है ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान विशेष:

शरीर का संस्थान, वर्ण, वय तथा उपयोगादि में भेद संभव है ।

यहाँ प्रत्येक समय सभी जीवों के एक जैसा, एक ही परिणाम संभव है ।

इसका काल अन्तर्मुहूर्त है ।

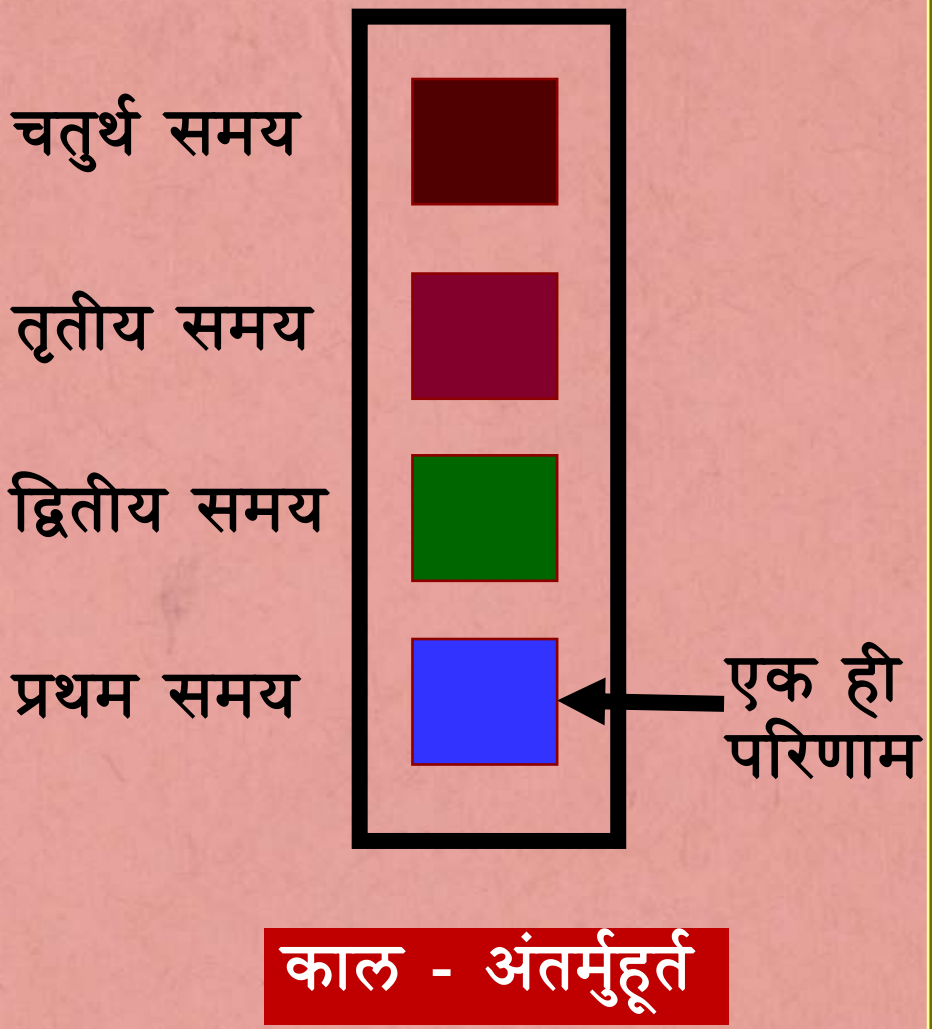

www.JainKosh.org

	अध:प्रवृत्तकरण	अपूर्वकरण	अनिवृत्तिकरण
परिणाम	ऊपर समय वाले जीवों के परिणाम नीचे समय वालों से मिलते हैं	प्रतिसमय अपूर्व (जो पहले न हुये हों) ऐसे नवीन परिणाम होते हैं	जहा संस्थानादि का भेद होने पर भी परिणामों में भेद नहीं
एक समयवर्ती जीवों के परिणाम	समान भी, भिन्न भी	समान भी, भिन्न भी	समान ही
भिन्न समयवर्ती जीवों के परिणाम	समान भी, भिन्न भी	भिन्न ही	भिन्न ही
अनुकृष्टि रचना	होती है	नहीं होती है	नहीं होती है
परिणामों की संख्या	असंख्यात लोकप्रमाण (ऊपर-ऊपर समान वृद्धि सहित)	असंख्यात लोकप्रमाण (अध:प्रवृत्तकरण से असंख्यातगुणे)	असंख्यात—जितने इसके समय
काल — तीनों का अंतर्मुहूर्त	सबसे बड़ा	अध:प्रवृत्तकरण से संख्यात गुणा हीन	अपूर्वकरण से संख्यात गुणा हीन
उदाहरण	16 समय	8 समय	4 समय

ये करण के परिणाम कहाँ-कहाँ होते हैं?

क्र	किस पद के लिए?	गुणस्थान
1	प्रथमोपशम सम्यक्त्व	1
2	अनंतानुबंधी की विसंयोजना	4 से 7
3	क्षायिक सम्यक्त्व	4 से 7
4	द्वितीयोपशम सम्यक्त्व	4 से 7
5	उपशम श्रेणी	7, 8, 9
6	क्षपक श्रेणी	7, 8, 9

www.JainKosh.org

- Reference : गोम्मटसार कर्मकांड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, धवल पुस्तक 10

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं प्लेलिस्ट चुनें ।